

Sl. 323, v. 2. पुत्रे राज्यं समर्थासन्नमृत्युः फलातिश-
यप्राप्तये संग्रामे प्राणत्यागं कुर्यात् । संग्रामासम्भवे तन-
शनादिनापि ॥ (*Coulloúca.*) — v. 2, a. समासृज्य *ÉD.*
Calc. ÉD. Lond. — समासज्य *ms. dévan. ms. beng. (Voyez*
liv. IV, sl. 257, v. 2, a.)

Sl. 324, v. 1, a. सदा युक्तो *ÉD. Calc. ÉD. Lond. N° II,*
ms. de Bombay, N°s V et VI. — समायुक्तो *ms. de M. Wil-*
kins, ms. dévan. ms. beng.

Sl. 328, v. 2, a. वैश्ये च पशुरक्षणं कुर्वति ॥ (*C.*)

Sl. 329, v. 2, b. देशकालपिद्वया मूल्योत्कर्षापकर्षं
वैश्यः ज्ञानीयात् ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 330, v. 2, a. मानोपायांश्च प्रस्थद्रोणादीन् ॥ (*C.*)

Sl. 332, v. 2, a. तथा इदं द्रव्यमेवं स्थाप्यते अनेन
च संयुक्तं चिरं तिष्ठतीति बुध्येत ॥ (*Coulloúca.*)

Sl. 335, v. 2, a. ब्राह्मणापाश्रयो *ÉD. Lond. ms. dévan.*
ms. beng. — ब्राह्मणायाश्रयो *ÉD. Calc. N° II, ms. de Bom-*
bay ? N° V ? La forme du प et celle du य se ressemblent
tellement, surtout dans certains mss., qu'il n'est pas toujours